JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue

JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)

An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

छत्तीसगढ़ राज्य के बी.एड. कॉलेजों में अध्ययनरत छात्राध्यापकों के शिक्षण गुणवत्ता पर गंथालय की भूमिका का मूल्यांकनः जांजगीर–चाम्पा जिले के विशेष संदर्भ में एक अध्ययन।

शोध निर्देशक
डॉ. आर.जी. यादव
(पूर्व पुस्तकालयाध्यक्ष)
डी.पी.विप्र. महाविद्यालय, बिलासपुर
जिला – बिलासपुर (छत्तीसगढ़) भारत

शोधार्थी
ओमप्रकाश राठौर
(पुस्तकालयाध्यक्ष)
ज्ञानरोशनी शिक्षा महाविद्यालय ,खोखरा
जिला –जांजगीर–चाम्पा (छत्तीसगढ़) भारत

❖ **सारांशः**— वर्तमान परिदृश्य में बीएड कॉलेजों के नियोजित प्रशिक्षण में उपयोगी पाठ्य सामग्रियों को सहेजकर सेवा देने में ग्रंथालय की भागीदारी एक अनिवार्य व महत्वपूर्ण कारक होती है। ग्रंथालय में गुणवत्तायुक्त प्रारूप अनुसार पाठ्य सामग्रियों के व्यवस्थित होने से शिक्षण कार्य प्रभावशाली होती ही है, साथ में छात्राध्यापकों के सैध्दांतिक और प्रायोगिक विषयी ज्ञान में भी वृध्दि होती है। शिक्षण के दौरान अध्ययनरत छात्राध्यापक ग्रंथालय के पुस्तकों के सार्थक उपयोग करते हुए विभिन्न शिक्षकोय गुण के काबिलियत अर्जित कर, प्रशिक्षण कार्य से अपने कौशल में निखार लाते हैं। शिक्षाशास्त्र की प्रशिक्षण की सम्पूर्ण पृष्ठभूमि को सही दिशा प्रदान करने में ग्रंथालय अपनी भागीदारी को दृढ़ता से कियान्वयन करती है और छात्राध्यापकों के ज्ञानार्जन पर सकारात्मक रूप से प्रभाव पड़ती है। इसी परिप्रेक्ष्य में छत्तीसगढ़ राज्य के जांजगीर चाम्पा जिले के अधिकतर निजी शिक्षा महाविद्यालय के ग्रंथालय अपनी रोल बखूबी से निभा रही है।

❖ **प्रस्तावनाः**— प्रतिस्पर्धा के दौर में शिक्षाशास्त्र इसलिए महत्वपूर्ण है जो अध्ययन–अध्यापन को महत्व देकर शिक्षकीय कार्य को अपने व्यवसाय के रूप में अपनाने में रूचि लेते हैं। छत्तीसगढ़ राज्य के स्कूल शिक्षा विभाग में हर दो– तीन वर्ष के अंतराल में शिक्षकों की भर्ती होने से युवा वर्ग का इस कोर्स में विशष रूझान है। बीएड कॉलेज में दाखिला लेने के पश्चात् शिक्षण कार्य प्रारंभ करने से ग्रंथालय की भूमिका प्रारम्भ हो जाती है। शिक्षाशास्त्र कोर्स की अवधि दो वर्षीय होने से इनके विषयों में परिवर्तन होने कारण ग्रंथालय के बहुसंख्या में पुस्तकें चलन से लगभग बाहर हो गई है। सीमित संसाधनों के परिणामस्वरूप प्रशिक्षण आवश्यकता की पूर्ति करने में जिले के अधिकतर बीएड कॉलेज के ग्रंथालय छात्राध्यापकों एवम कार्यरत शिक्षकों को सेवा प्रदान करने में चुनौतीपूर्ण कार्य कर रहे हैं। शिक्षाशास्त्र कोर्स के प्रशिक्षण के चक में गंथालय का एक टीचिंग सपोर्टर के रूप में कार्य करने में जिले के अधिकतर ग्रंथालय अभाव के दौर से गुजर रही है जिससे शिक्षण गुणवत्ता पर असर पड़ रही है।

❖ **शब्द सूचकः** ग्रंथालय व्यवस्था, शिक्षाशास्त्र प्रशिक्षण, शिक्षण गतिविधि, कौशल विकास, शिक्षण गुणवत्ता।

❖ अध्ययन का उद्देश्यः—

1./ प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य यह है कि बीएड कॉलेजों में ग्रंथालय के संचालित होने से अध्ययनरत छात्राध्यापकों के शिक्षण कार्य में कितनी सहायक हो रही है?

2./ बीएड कॉलेजों में शिक्षा के अतिरिक्त गतिविधियों में ग्रंथालय के पाठ्य सामग्री की उपयोग से छात्राध्यापकों को समुचित लाभ मिल रही है कि नहीं।

3./ छात्राध्यापकों के अध्ययन आवश्यकता की पूर्ति के लिए दो वर्षीय पाठ्यक्रम के अनुसार पाठ्यसामग्री की समुचित व्यवस्था है कि नहीं।

4./ बीएड कॉलेजों के ग्रंथालय में इलक्ट्रॉनिक लाईब्रेरी की सुविधा है अथवा नहीं। छात्राध्यापकों को ई—लाईब्रेरी की सुविधा कॉलेजों के द्वारा लाभ पहुंचाई जा रही है कि नहीं।

5./ कॉलेज प्रबंधन के द्वारा शिक्षण सत्र प्रारम्भ होने के पूर्व एनसीटीई और एससीईआरटी के नियमानुसार ग्रंथालय के लिए नई पाठ्य सामग्री कय करते हैं कि नहीं।

6./ जिले में संचालित समस्त बीएड कॉलेजों में छात्राध्यापकों को ग्रंथालय से क्या—क्या सुविधाएं दो जाती है? ग्रंथालय में पूर्णकालिक लाईब्रेरियन नियुक्त है कि नहीं।

❖ परिकल्पनाएंः

1./ कॉलेज प्रशासन के द्वारा मानकों के अनुरूप पुस्तकें कय करके शैक्षणिक सत्र प्रारम्भ होने से पूर्व ग्रंथालय में व्यवस्थित करवाने की संभावना होगी।

2./ बीएड कॉलेजों में गुणवत्तापूर्ण पुस्तकों की व्यवस्था होने से छात्राध्यापकों में ग्रंथालय के प्रति और भी अधिक रूझान बढ़ने की संभावना होगी।

3./ छात्राध्यापकों के प्रशिक्षण से संबंधित प्रायोगिक कार्य को करने में सुविधाजनक होने की संभावना होगी।

4./ मांग के अनुरूप पाठ्य सामग्रियों के व्यवस्था होने से प्रशिक्षण सत्र में पठन—पाठन कार्य प्रभावशाली होने की संभावना होगी।

5./ ग्रंथालय के प्रभावी सेवा से छात्राध्यापकों के शिक्षण कौशल के तकनीक में सकारात्मक रूप से प्रभाव पड़ने की संभावना होगी।

❖ शोध प्रविधिः—

1./ प्रस्तुत अध्ययन में जांजगीर चाम्पा जिले के नीजि बीएड कॉलेजों के ग्रंथालय से संबंधित डाटा प्राप्ति के लिए शोधार्थी के द्वारा चालीस प्रश्न की एक प्रश्नावली तैयार किया गया था। उसमें छात्राध्यापकों के शिक्षण गुणवत्ता से संबंधित उपयोगी प्रश्नों को कमानुसार शामिल किया गया था।

2./ प्रस्तावित प्रश्नावली को जिले के सम्पूर्ण नीजि बीएड कॉलेज में शोधार्थी के द्वारा उपस्थित होकर ग्रंथपाल अथवा प्रभारी ग्रंथपाल से प्रश्न पूछकर उत्तर को संकलित की गई थी। सभी कॉलेज के डाटा प्राप्ति के पश्चात् उनका विश्लेषण करने के उपरांत शोध कार्य की पूर्ति की गई थी।

3./ उपरोक्त के अलावा प्रत्येक बीएड कॉलेज के बीस—बीस को संख्या में यादृच्छिक रूप से छात्राध्यापको के ग्रुप बनाकर उनसे प्रश्नावली के माध्यम से प्रश्न पूछकर उत्तर प्राप्त करने के पश्चात् प्रस्तुत अध्ययन की प्रतिपूर्ति की गई थी।

❖ सीमाएंः—

1./ प्रस्तुत अध्ययन में छत्तीसगढ़ राज्य के जांजगीर—चाम्पा जिले के सिर्फ निजी शिक्षा महाविद्यालयीन ग्रंथालय में छात्राध्यापकों के शिक्षा गुणवत्ता पर पड़ने वाले प्रभाव पर अध्ययन को सीमित किया गया है।

2./ प्रस्तुत अध्ययन को बीएड कॉलेजों में ग्रंथालय के सम्पूण प्रबंधन करने तक की अध्ययन को सीमित किया गया है।

❖ संबंधित शोध साहित्य का अवलोकनः–

1./ प्रस्तुत अध्ययन को मूर्त रूप देने में शोधार्थी के द्वारा बीएड कोर्स के विभिन्न विषयों का अध्ययन किया गया था। कई विश्वद्यालयों के बीलिब और एमलिब कोर्स के गंथालय प्रबंध की पुस्तकों का भी सूक्ष्म अवलोकन की गई थी। ताकि इस शोध कार्य में वास्तविक रूप से अनुसन्धान पत्र को सही–सही प्रस्तुत की जा सके।

2./ शोधगंगा सें अनेक विश्वविद्यालयों के ग्रंथालय विज्ञान कई शोध– प्रबंध का स्वयं शोधार्थी के द्वारा अध्ययन किया गया था, जिससे प्रस्तुत अध्ययन को सजीव रुप प्रदान करने को प्ररणा मिली ।

❖अध्ययन का महत्व :–

1./ बीएड कॉलेंजों के ग्रंथालय में पाठ्यकम के चलन के अनुरुप सही पाठ्य सामग्रियों के व्यवस्थित होने से छात्राध्यापकों के शिक्षण कार्य में गति आएगी और अध्ययन– अध्यापन करने को दक्षता में वध्दि होगी ।

2./ ग्रंथालय के समुचित प्रबंधन से अध्यापन कार्य सरल होगी । विषयी ज्ञान में गहनता के साथ प्रशिक्षण कार्य जीवंत रहेगी । स्व –अध्ययन में सभी छात्राध्यापक और भी अधिक रुचि लेकर अध्ययन को प्रेरित होंगे ।

3./ ग्रंथालय में शिक्षाशास्त्र से संबंधित विविध पाठ्य सामाग्रियों के होने से छात्राध्यापकों को सेमिनार, शिक्षण कला, वर्कशाप आयोजन में कठिनाई नहीं होगी।

4./ आवंटित कालखंड में प्रायोगिक कार्य, पाठयोजना कार्य, परीक्षण पुस्तिका, सूक्ष्म शिक्षण, असाइमेंट लेखन और मुख्य परीक्षा की तैयारी में ग्रंथालय की सहायता अनिवार्य होगी।

5./ ग्रंथालय में विभिन्न टाईटल की पुस्तकें के व्यवस्थित होने से छात्राध्यापकों को पुस्तक की कय के लिए वित व्यय करने की जरूरत नहीं होगी।

6./ ग्रंथालय में एनसीईआरटी और एससीईआरटी के मापदंड के अनुसार विशेषज्ञतापूर्ण जर्नल्स, पत्रिकाएं, शोध पत्रों, नई शिक्षा नीति, इत्यादि प्रकार के आवधिक प्रकाशन की पाठ्यसामग्री अध्ययन हेतु उपलब्ध करने को बीएड कॉलेज प्रशासन प्रेरित होती।

❖ जांजगीर–चाम्पा जिले के बीएड कॉलेजों में ग्रंथालय की मूल्यांकनः–

(अ) सकारात्मक मूल्यांकनः–

1./ जांजगीर चाम्पा जिले में बहु संख्या में बीएड कॉलेज संचालित होने से जिले के विद्यार्थियों को अन्य जिले में प्रशिक्षण के लिए नहीं जाना पड़ता है। दाखिला लेने के पश्चात् यथाशीघ्र ग्रंथालय से पुस्तकें निर्गत की जाती है जिससे वे स्व–अध्ययन लाभ प्राप्त करते हैं।

2./ अधिकार बीएड के ग्रंथालय में मुक्त प्रवेश होने से छात्राध्यापक अपनी पसंद के पुस्तकें और टॉपिक को, उपलब्ध के अनुसार ग्रंथालय से अपने अध्ययन आवश्यकता की पूर्ति कर लेते हैं।

3./ ग्रंथालय के आवंटित कालखंड में मौन वाचन करके विविध शिक्षाप्रद पुस्तकें से ज्ञान अर्जित करने में छात्राध्यापकों को सुविधा हो रही है।

4./ बीएड कॉलेज में कार्यरत व्याख्याता को शिक्षण कार्य प्रारंभ करने में ग्रंथालय क पाठ्य सामग्रियों से अध्यापन में मददगार हो रही है।

5./ कई बीएड कॉलेज के ग्रंथालय में अनुसंधान परक पुस्तकें व्यवस्थित है जिससे शिक्षाशास्त्र के छात्राध्यापकों को विभिन्न शिक्षण कार्य में मददगार हो रही है।

6./ जिले के अनेक बीएड कॉलेज में प्रशिक्षित ग्रंथालय नियुक्त है जिससे मौजूदा संसाधन के अंतर्गत सही तरीके से ग्रंथालय की व्यवस्था बनाये हुए हैं।

(ब) नकारात्मक मूल्यांकनः–

1./जांजगीर–चाम्पा जिले के सभी नीजि बीएड कॉलेज में संचालित ग्रंथालय की अनुसंधान करने पर यह पाया गया कि जिले के अधिकतर बीएड कॉलेज के ग्रंथालय में पाठ्यकम से संबंधित बहुत कम चलन की पुस्तकें रखे हैं, जिस कारण से शिक्षा गुणवत्ता में नकारात्मक रूप से प्रभावित हो रही है।

2./जिले के अधिकतर बीएड कॉलेज क ग्रंथालय की लाईब्रेरी साइंस के दृष्टिकोण से वर्गीकरण और सूचीकरण नहीं है। ग्रंथालय के पाठ्य सामग्री का सेल्फ रेक्टिफिकेशन नहीं करने से पुस्तकें यत्र–तत्र बिखरी होने से ग्रंथालय के प्रबंधन करने में कमी पाई गई है।

3./ अधिकतर बीएड कॉलेजों में वाचन कक्ष नहीं हैं। अनिवार्य साज– सज्जा में कमी पाई गई हैं। न्यूजपेपर रीडिंग टेबल, पीरियोडिकल डिस्प्ले बोर्ड का अभाव है, जिस कारण से छात्राध्यापकों कों ग्रंथ और मैगजीन खोजने में समय का अनावश्यक रुप से व्यय होती है।

4./ ग्रंथालय में नई पाठ्यकम के अनुसार पुस्तकें नहीं होने से छात्राध्यापकों को शिक्षण से संबंधित गुणवत्तापूर्ण पुस्तकें नहीं हैं। अधिकतर बीएड कॉलेजों में विद्याथियों नियमित रुप से कॉलेज नहीं आते । प्रत्येक शैक्षणिक सत्र में अधिकतर संख्या में विद्यार्थी कॉलेज अटेंड नहीं करने के वजह से ग्रंथालय का सही रुप से उपयोग वर्ष भर नहीं होती है।

5./ बीएड कॉलेजों के द्वारा चार महीने के लिए विभिन्न विद्यालयों में छात्राध्यापकों को टीचिग कार्य और डेढ़ महीने को ब्लाक टीचिंग कार्य लगती है। उस दौरान अधिकतर छात्राध्यापक बीएड कॉलेज नहीं आते है, जिससे शिक्षण कार्य सतत् रुप से नही चलती हैं। जिस कारण से ग्रंथालय का अधिकतम उपयोग नही होती है।

6./ जिले के अधिकतर बीएड कॉलेजों में तीन– चार की संख्या में व्याख्याता की नियुक्ति होने से बीएड कॉलेज नियमित रुप से पढ़ाई नही होती है, जिनका असर छात्राध्यापको के शिक्षण पर पड़ रही है । इन्ही मूल कारण से अधिकतर छात्राध्यापक प्रश्न बैंक, गाइड पर निर्भर हो जातें हैं परिणामस्वरुप ग्रंथालय के उपयोग नकारात्मक रुप से प्रभावित हो रही है।

7./ जिले के सभी बीएड कॉलेजों में ग्रंथपाल की नियुक्ति विश्वविद्यालय के नियम परिनियम –28 के तहत की जाती हैं, परन्तु कॉलेज प्रबंधन के द्वारा ग्रंथपाल को जुलाई से अप्रैल तक का ही रोजगार प्रदान करते हैं जिस कारण से ग्रंथालय की भौतिक सत्यापन और प्रबंधन कार्य प्रत्येक शैक्षणिक सत्र में बाधित होती हैं, जिनका असर शिक्षण गुणवत्ता पर प्रतिकूल असर पड़ रही है।

8./ कोविड –19 के कारण दो वर्षों तक कॉलेज के बंद होने से ग्रंथालय भी बंद थो । इस दौरान जिले के सम्पूर्ण निजो बीएड कॉलेजों में कार्यरत ग्रंथपाल को वेतन प्रदान नही की गई । पुनः कॉलेज खुलने पर अधिकतर गंथपाल कॉलेज में सवा देने को अश्मर्थ होने से कॉलेज प्रबंधन द्वारा अप्रशिक्षित को प्रभार दिए हुए हैं। जिससे ग्रंथालय का समुचित उपयोग नकारात्मक रुप से प्रभावित हो रही हैं।

जाजगीर– चाम्पा जिले के ग्रथालय की ब्यौरा

-

क्र.	बी. एड. कालेज का नाम	नैक ग्रेडिंग	संचालित कोर्स	पुस्तक संख्या	प्रशिक्षित ग्रंथपाल	ई–लाईब्रेरी की सुविधा	ग्रंथालय की कम्प्यूटरी कृत	ई कोर्स के मानक अनुसार पाठ्य सामग्री	ग्रंथालय कालखंड आयोजन	विद्यार्थियों के प्रायोगिक कार्य में उपयोगी	प्रत्येक शैक्षिक सत्र में पुस्तक कय
1.	ज्ञानदीप कालेज आफ एजुकेशन, जांजगीर	नहीं	बी. एड.	पर्याप्त	हां	नहीं	नहीं	नहीं	हां	औसत	हां
2.	ज्ञानोदय कालेज आफ एजुकेशन, जांजगीर	नहीं	बी. एड.	पर्याप्त	हां	नहीं	नहीं	नहीं	हां	औसत	हां
3.	कोणार्क कालेज आफ एजुकेशन, खोखसा, जांजगीर	B+	डी. एड. बी. एड. एम. एड.	पर्याप्त	हां	नहीं	नहीं	औसत	हां	औसत	हां
4.	हरिशंकर कालेज आफ एजुकेशन, सरखों	नहीं	बी. एड.	पर्याप्त	हां	नहीं	नहीं	नहीं	हां	औसत	नहीं
5.	उत्कर्ष एजुकेशन कालेज, सरखों	नहीं	बी. एड.	पर्याप्त	हां	नहीं	नहीं	नहीं	हां	औसत	नहीं
6.	केशरी शिक्षा समीति, खोखरा	नहीं	बी. एड.	पर्याप्त	हां	नहीं	नहीं	नहीं	हां	औसत	हां
7.	ज्ञान रोशनी लोक कल्याण संस्था, खोखरा	B+	बी. एड.	पर्याप्त	हां	नहीं	नहीं	औसत	हां	उत्कृष्ट	हां
8.	लाल बहादुर शास्त्री कालेज आफ एजुकेशन, बलौदा	नहीं	बी. एड.	पर्याप्त	हां	नहीं	नहीं	नहीं	हां	औसत	नहीं
9.	चैतन्य कालेज आफ एजुकेशन, पामगढ़	नहीं	बी. एड.	पर्याप्त	नहीं	नहीं	नहीं	नहीं	हां	औसत	नहीं
10.	मां कालेज आफ एजुकेशन सोसायटी, पामगढ़	नहीं	बी. एड.	पर्याप्त	नहीं	नहीं	नहीं	नहीं	हां	औसत	नहीं
11.	राहौद एजुकेशन सोसायटी, राहौद	B+	डी. एड. बी. एड. एम. एड.	पर्याप्त	हां	नहीं	नहीं	औसत	हां	उत्कृष्ट	हां
12.	सांदीपनी कालेज आफ एजुकेशन, राहौद	C	बी. एड.	पर्याप्त	हां	नहीं	नहीं	नहीं	हां	औसत	नहीं
13.	श्री महंत लाल दास एजुकशन कालेज, शिवरीनारायण	नहीं	बी. एड.	पर्याप्त	हां	नहीं	नहीं	नहीं	हां	औसत	नहीं
14.	शिवशक्ति कालेज आफ एजुकेशन, खोड़सी	नहीं	बी. एड.	पर्याप्त	नहीं	नहीं	नहीं	नहीं	हां	औसत	नहीं
15.	राधाकृष्ण शिक्षा समीति, नवागढ़	नहीं	बी. एड.	पर्याप्त	नहीं	नहीं	नहीं	नहीं	हां	औसत	नहीं
16.	पं. जवाहर लाल नेहरू शिक्षा महाविद्यालय, नवागढ़	नहीं	बी. एड.	पर्याप्त	हां	नहीं	नहीं	नहीं	हां	औसत	नहीं
17.	ऋषभ तिर्थ शिक्षा महाविद्यालय, दमोहधारा	नहीं	बी. एड.	पर्याप्त	हां	नहीं	नहीं	नहीं	हां	औसत	नहीं
18.	जगरानी देवी एजुकेशन कालेज, बाराद्वार	नहीं	बी. एड.	पर्याप्त	हां	नहीं	नहीं	नहीं	हां	औसत	नहीं
19.	श्याम शिक्षा महाविद्यालय, सक्ति	नहीं	बी. एड.	पर्याप्त	हां	नहीं	नहीं	नहीं	हां	औसत	नहीं

❖ सुझाव :–

1./ ग्रंथालय में बीएड कॉलेज प्रबंधन को उन्मुखीकरण, अनुवर्ग शिक्षण, परवर्ती लेखन दस्तावेज, दैनिक शिक्षण योजना, इकाई योजना, कार्यशाला, सेमिनार, साप्ताहिक मूल्यांकन, अध्यापन अवलोकन, व्यावहारिक कार्य प्रायोगिक पुस्तकें छात्राध्यापकों के संख्या के आधार पर ग्रंथालय में पुस्तकें व्यवस्थित करवानी चाहिए।

2./ छत्तीसगढ़ सरकार को जांजगीर –चाम्पा जिलें में बीएड कॉलेज प्रारंभ करके सुविधायुक्त ग्रंथालय प्रारंभ करनी चाहिए, जिससे की समाज के गरीब वर्ग के प्रतिभावान विद्यार्थी दाखिला लेकर बेहतर शिक्षा प्राप्त करक, शिक्षा के क्षेत्र में अपना कैरियर बना सके।

3./ बीएड के न्यू कोर्स के अनूसार नई पुस्तक सामग्रियों को प्रत्येक छात्राध्यापकों के पीछे पांच टाईटल की पुस्तके कय करके ग्रंथालय में सूचीकरण करनी चाहिए। ग्रंथालय में चलन से बाहर के अनुपयोगी पुस्तकों को सेल्फ में व्यवस्थित नही करनी चाहिए । संख्या गिनाने के नाम पर अनावश्यक पुस्तकें को ग्रंथालय में व्यवस्थित करवाने वाले कॉलेज प्रशासन पर विश्वविद्यालय के द्वारा उचित कार्यवाही की जानी चाहिए ।

4./ शिक्षाशास्त्र के कोर्स के बजट में कॉलेज प्रबंधन को प्रत्येक साल न्यूनतम एक लाख रुपये का पुस्तक कय करने का नियम लागू हो। पाठ्य सामग्री की कय में वित्त का सम्पूण नियंत्रण ग्रंथपाल के पास होनी चाहिए।

5./ प्रशिक्षित ग्रंथपाल को सम्पूर्ण वर्ष के लिए नियुक्ति करके निर्धारित वेतन प्रदान करें । विश्वविद्यालय अथवा एससीईआरटी के इंस्पेक्शन टीम को बीएड कॉलेज में जांच के लिए आए और ग्रंथालय के मूल्यांकन सही–सही ईमानदारी

से करें। ग्रंथालय के कमी को ग्रंथपाल के बजाय बीएड कालेज प्रबंधन को अवगत कराए। पाठ्य सामग्रियों की कमी होने पर निर्धारित समय में पुस्तकें खरीद करने की आदेश टीम के द्वारा कालेज प्रशासन को देनी चाहिए।

6./ ग्रंथालय में वाचन के लिए शिक्षा संकाय के अनेक जर्नल्स, समाचार पत्र, विविध पत्रिकाएं, हिन्दी और अंग्रेजी भाषा का कय करके प्रदर्शन पटल पर रखना चाहिए।

7./ ग्रंथालय के कालखण्ड में शिक्षाशास्त्र के छात्राध्यापकों के लिए पूरे सप्ताह में पांच दिन तक वाचन और इक्कीस दिन के पुस्तक निर्गत किया जाना चाहिए।

8./ ग्रंथालय में एमलिब के साथ संगत विषय में नेट/सेट की अर्हक अथवा पीएचडी डिग्रीधारी को ग्रंथपाल पद में पदस्थ करें जिससे वे ग्रंथालय के सार्वांगीण गुणवत्ता प्रबंधन के साथ वर्गीकरण, सूचीकरण कार्य, डीडीसी से करके सेवा कार्य प्रभावी रूप से संचालित करे सक। डीएड, बीएड, एमएड. के पुस्तको को अलग–अलग अलमारियों में सही तकनीक से सूचीकरण करके व्यवस्थित रखनी चाहिए।

9./ ग्रंथालय में प्रत्येक सत्र के लिए ई–लाईब्रेरी के लिए इन्फ्लिबनेट/कैलिबनेट/मैनलिबनेट से सदस्यता लेकर साल भर के लिए विद्यार्थियों को ई–लाईब्रेरी की सुविधा को सतत् जारी रखना चाहिए।

10./ पुस्तकालय के कम्प्यूटरीकृत करने के लिए सुविधानुसार लाईब्रेरी मैनजमेंट सॉफ्टवेयर का प्रबंध करनी चाहिए। पुस्तक आगम–निर्गम के लिए बार कोड पद्धति को अपनानी चाहिए।

11./ पुस्तकों की सुरक्षा के लिए रेडियो आइडेंटिफिकेशन टेक्नोलाजी का उपयोग में लाना चाहिए, जिससे कि बीएड कॉलेजां के पुस्तकों की चोरी हाने की संभावना नहीं होगी।

12./ एम. एड. के विद्यार्थियों को अनुसंधान कार्य और सूक्ष्म अध्ययन को बढ़ावा के लिए डिजिटल लाइब्रेरी सॉफ्टवेयर कोहा या ई–प्रिंट या डी–स्पेस इत्यादि की व्यवस्था करें। विद्यार्थियों को कालेज के रेंज में आने से मुफ्त में वाई–फाई के साथ मोबाइल में ई–बुक्स, वीडियो लेक्चर्स, डाटाबेस एक्सेस करने की सुविधा होनी चाहिए।

❖ निष्कर्ष :–

जांजगीर –चाम्पा जिलें के युवा वर्ग में शिक्षाशास्त्र के अलख जगाने में समस्त बीएड कॉलेजों को प्रगतिशील नियम अपनाना होगा, जिससे समाज के भावी छात्रों का शिक्षा प्रदान करके राष्ट्र के उन्नति में अपनी भागीदारी सही रुप में निर्वाहन कर सकें ।

बीएड कॉलेजों के मौजूदा समस्याओं को देखते हुए उसे भौतिक और इलेक्ट्रानिक रुप से ज्ञानवर्धक पाठ्य सामग्रियों की सेवा दने में सक्षम बनाने के लिए राज्य सरकार, विश्वविद्यालय और महाविद्यालय प्रशासन को पूर्ण मनोबल के साथ कार्य करना होगा तभी बीएड कालेज के ग्रंथालय सेवा देने में कामयाब होगा । उपरोक्त के अतिरिक्त प्रस्तुत अध्ययन में निष्कर्ष इस प्रकार हैं–

1./ जिले के निजी बीएड कॉलेज के ग्रंथालय को सही रुप से सेवा देने को प्रोत्साहन के लिए राज्य सरकार के द्वारा एससीईआरटी टीम को हर शैक्षणिक सत्र में दो –तीन बार कड़ाई से ग्रंथालय का मूल्यांकन करके ग्रंथालय की व्यवस्था में सुधार लाई जा सकती है, लकिन पुरे सत्र गुजर जाने के पश्चात् भी निरीक्षण नहीं की जाती हैं।

2./ प्रत्येक शैक्षणिक सत्र के दौरान संबंधित विश्वविद्यालय के टीम को भी बीएड कॉलेज की मूल्यांकन करने के लिए बिना तारिख बताए उपस्थित होकर सही रुप से मूल्यांकन नहीं की जाती है। ग्रंथालय में कमी पाए जाने पर संबध्दता को स्थगित करने की कार्यवाही नही की जाती है ।

3./ जिले के सम्पूर्ण बीएड कॉलेज में शिक्षाशास्त्र के कोर्स को व्यापार के दृष्टिकोण से संचालित की जा रही है। बीएड कॉलेज प्रबंधक प्रति वर्ष मोटी रकम फीस अर्जित करने के पश्चात् भी ग्रंथालय के लिए पुस्तकें कय नहीं करते हैं और विद्याथियों के द्वारा बुक बाइंडिगं से जमा किये पुस्तकों को ही नया पुस्तके मान लेते हैं । संचालकों के द्वारा प्रत्येक वर्ष अनिवार्य रुप से एक लाख रुपय तक की नई पुस्तकों का कय नहीं करते हैं । नियुक्त किए हुए प्रशिक्षित ग्रंथपाल को धारा– 28 के तहत पूरे साल भर वेतनमान प्रदान नही की जाती है । संचालक यदि चाहें तो बीएड कॉलेजों में ग्रंथालय और ग्रंथपाल दोनों की अच्छी व्यवस्था करने से छात्राध्यापकों के शिक्षा की गुणवत्ता में वृध्दि की जा सकती हैं ।

4./ ग्रंथालय में नई संस्करण के पुस्तकें के नहीं होने से अध्ययनरत छात्राध्यापक नियमित रुप से ग्रंथालय कालखण्ड को अटेंड नहीं करते हैं । दूसरी ओर अधिकतर विद्यार्थियों की मंशा यही रहती है कि किसी भी तरह से बिना क्लास अटेंड किये शिक्षाशास्त्र की मार्कशीट अर्जित हो जाये, इसी सोंच के कारण वे साल भर कॉलेज नहीं आते हैं । इन्हीं कारणों से शिक्षा गुणवत्ता का सार्थक असर अधिकतर छात्राध्यापकों पर नहीं पड़ती हैं ।

❖ संदर्भ ग्रंथ :–

1./ डा. एन.के. शर्मा ,अध्यापक शिक्षा, 2009 के. एस. के. प्रकाशन, नई दिल्ली ।

2./ शर्मा राधेश्याम, 2008, कौशल आधारित शिक्षण की रुपरेखा , एन. आर. बुक्स प्रकाशन, नई दिल्ली।

3./ डॉ. कुसुम शर्मा, 2006, एजुकेशन एडमिनिस्ट्रेशन एड मैनेजमेंट ,राधा प्रकाशन आगरा।

4./ अनुराग वाजपेयी, 2008, शिक्षण की विधाएं एवम् अनुदेशन, एन. आर. बुक्स, नई दिल्ली ।

5./ पारीक महेश कुमार, शैक्षिक प्रबंध एवम् विद्यालय संगठन, 2010, नीलकंठ प्रकाशन, जयपुर ।

6./ शर्मा डॉ. एन. के. 2009, अध्यापक शिक्षा, एस. के. पब्लिशर्स, नई दिल्ली ।

7./ डॉ. एम. बी. शर्मा, शिक्षा दर्शन के आयमिक सिध्दांत, 2010, ए. पी. एच. प्रकाशन, नई दिल्ली ।

8./ प्रो. एस. के. चौहान, शिक्षा एवम् शिक्षण सिध्दांत, 2007, साहित्य प्रकाशन, आगरा।

9./ राव. दिगुमार्टी भास्कर, इनसाइक्लोपीडिया आफॅ एजुकेशन प्लानिंग एंड डेवेलपमेंट, 2009, ए.पी.एच. प्रकाशन, नई दिल्ली।

10./ डॉ. कुसुमलता, प्रकाश नारायण नाटाणी, शैक्षिक शोध पध्दति शास्त्र, 2010, राजस्थान प्रकाशन, जयपुर।